द डिवाइन लाइफ सोसायटी के सदस्यों में परस्पर एकत्व की भावना

द डिवाइन लाइफ सोसायटी के सदस्यों में परस्पर एकत्व की भावना

श्री स्वामी चिदानन्द

अनुवादिका

श्री स्वामी शिवाश्रितानन्द माता जी

प्रकाशक

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय : शिवानन्दनगर २४९१९२

जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड (हिमालय), भारत

www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथम संस्करण : २०१४

(२,००० प्रतियाँ)

द डिवाइन लाइफ ट्रस्ट सोसायटी

Swami Chidananda Birth Centenary Series—21

निःशुल्क वितरणार्थ

'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्दनगर' के लिए
स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाशित तथा उन्हीं के द्वारा 'योग-वेदान्त
फारेस्ट एकाडेमी प्रेस, पो. शिवानन्दनगर २४९१९२,
जिला टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड' में मुद्रित।
For online orders and Catalogue visit : dlsbooks.org

द डिवाइन लाइफ सोसायटी के सदस्यों में परस्पर एकत्व की भावना

सर्वव्यापक, दिव्य सत्ता, परम पिता परमात्मा के श्रीचरणों में श्रद्धापूर्ण प्रणाम! हम उस परम सत्य, जो अनादि और अनन्त तथा असीम और अविच्छिन्न भी है, के समक्ष नतमस्तक हो कर वन्दना करते हैं! यह अनन्त और शाश्वत सत्ता जो, सर्वदा विद्यमान सत्ता है, यही स्रोत एवं उद्गम, आधार एवं शक्ति तथा समस्त प्राणियों का लक्ष्य एवं प्राप्ति है। उसी महान् सत्ता को, परम पिता परमात्मा को, उस दिव्य उपस्थिति को हम श्रद्धापूर्वक समर्पण करते हैं! उनकी कृपा से आप सबको जीवन के चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति हो! वे कृपापूर्वक आपको परिपूर्णता के पथ की ओर निर्देशित करें! उनकी करुणा आपको प्रकाश और मोक्ष प्रदान करे, इस लौकिक जीवन में भी सफलता प्रदान करे!

परम पावन, श्रद्धेय गुरुदेव, जिनके दिव्य सान्निध्य में हम यहाँ प्रात:कालीन ब्राह्ममुहूर्त ध्यान सत्र में एकत्रित हुए हैं, को प्रेमपूर्ण श्रद्धा-सुमन समर्पित हैं। उनके कृपा-कटाक्ष से आपके अन्तर्निहित प्रसुप्त दिव्यता जागृत हो! उनका वरद्हस्त, इस जाग्रत दिव्यता को आपके विचारों, वाणी और कर्मों के द्वारा पुष्पित, पल्लवित, विकसित एवं प्रकटित करके आपके सम्पूर्ण जीवन को, और जीवन की समस्त गतिविधियों को दिव्यता से ओत-प्रोत कर दे! आप दिव्यता का केन्द्र बन जायें, आप साकार दिव्यता बन जायें!

भारत के धार्मिक एवं आध्यात्मिक जगत् में, और विशेष रूप से हिन्दू धर्म में १०८ के अंक को एक परिपूर्ण अंक माना जाता है। इसमें अंक १०० पूर्णांक है तथा कोई गलती अथवा कमी न रह गयी हो, यह विचार में रखते हुए उसमें ८ की संख्या और बढ़ा दी गयी है जिससे कि १०० की गणना परिपूर्ण रहे।

आज १ अगस्त है। आगामी मास 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी', जिसकी संस्थापना गुरुदेव ने १९३६ में की थी,

गुरुदेव की १०८ वीं जयन्ती मनाने जा रही है। उनका जन्म १८८७ में हुआ था, अत: १९८७ उनका जन्म-शताब्दी वर्ष हुआ तथा ८ वर्ष बाद का यह दिन, यह संस्था उसे एक विशेष ढंग से, केवल एक ८ सितम्बर को ही नहीं प्रत्युत् ६, ७ और ८ तीन दिवसों के रूप में मनाने जा रही है।

गुरुदेव की पावन जयन्ती कौन मना रहा है? क्या यह कोई अवैयक्तिक तत्त्व है? क्या यह मात्र संस्था भर ही है? क्या यह कोई निर्माणित व्यवस्था मात्र है जिसे आश्रम का नाम दे दिया गया है? अथवा यह उससे अलग कुछ भिन्न, कुछ अधिक है? क्या यह अधिक सशक्त, स्पन्दित और जीवन्त है? क्या यह ऐसे सजीव प्राणधारी लोगों का समूह है जिनमें कुछ भाव हैं, कुछ भावनाएँ हैं, कुछ स्पन्दन हैं? क्या इसे आप मना रहे हैं? इस महत्त्वपूर्ण विषय के सम्बन्ध में, इस महान् घटना के विषय में आपके क्या विचार और भावनाएँ हैं?

गुरुदेव का यह सेवक यही चाहता है कि आपमें से प्रत्येक व्यक्ति इस पर मनन करे ''इनमें से क्या है जिसके कारण मैं इस आश्रम से सम्बन्धित हूँ? शीत काल में प्राप्त होने

वाली यहाँ की गर्म पानी की सुविधा? ग्रीष्म ऋतु में पंखों की सुविधा? यहाँ उपलब्ध होने वाली अन्य सुविधाएँ और आराम? अथवा यहाँ की समस्याओं, कठिनाइयों तथा यहाँ के विशेष उत्सवों से भी मेरा उतना ही नाता है? यह सब-कुछ भी उतने ही मेरे अपने हैं, क्योंकि मैंने पूज्य गुरुदेव से बहुत-कुछ प्राप्त किया है। मुझे उनकी शिक्षाओं से बहुत सहायता मिली है। मैंने उनकी पुस्तकें पढ़ी हैं और उनसे मुझे बहुत प्रेरणा प्राप्त हुई है। इसलिए ऐसी युगान्तरकारी घटना, ऐसे विशेष उत्सव और कार्यक्रम, जिनका परम पावन गुरुदेव से सीधा सम्बन्ध है, उनके साथ मेरा एक व्यक्ति के रूप में, आश्रम के अन्तेवासी के रूप में तथा 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' के सदस्य के रूप में गहन सम्बन्ध है।''

शिवानन्द आश्रम में रहने वाला प्रत्येक अन्तेवासी, अपने अन्तेवासी होने के सौभाग्य के परिणामस्वरूप स्वयमेव ही 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' का एक सदस्य हो जाता है, उस संस्था का सदस्य जिसके सदस्य सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य के नियमों के पालन का संकल्प करते हैं। सभी सदस्यों का यह

कर्तव्य बन जाता है कि वे सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, पवित्रता, काया-वाचा-मनसा पवित्रता, उदात्त चरित्र तथा सदाचरण का पालन करें। शिवानन्द आश्रम के प्रत्येक अन्तेवासी का यह आध्यात्मिक सौभाग्य, विशेष वरदान एवं पावन दायित्व है कि वह इन सिद्धान्तों के अनुसार अपना जीवन जिये तथा स्वयं को इन नियमों का प्रकटीकृत रूप, साकार स्वरूप ही बना ले, क्योंकि वे सब भी 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' के सदस्य माने जाते हैं और उनके जीवन, उस संस्था के मुख्यालय से गुँथे हुए हैं, जो इस प्रकार का उदात्त जीवन जीने की प्रेरणा दे रही है। वे सब मुख्यालय का अंग हैं, उस संस्था के मुख्यालय का अंग हैं, जो इस आदर्श का प्रचार-प्रसार कर रही है।

इसलिए, यह दास चाहता है कि आपमें से हर एक व्यक्ति इस दृष्टिकोण से स्वयं अपने-आपको देखे, इस प्रकाश में देखे और मनन करे कि इसका क्या अर्थ है, क्या उद्देश्य है। सद्गुरुदेव की १०८ वीं जयन्ती में यह मनन सर्वप्रथम और सर्वोपरि है।

और दूसरा, संस्था का एक अंग होने के नाते, जब संस्था इसे मना रही है तो प्रत्येक व्यक्ति के लिए बैठ कर यह सोचना अत्यन्त स्वाभाविक है ''यह दिन अब शीघ्र ही आने वाला है, अत: मुझे इसे कैसे मनाना चाहिए? किस प्रकार उन कार्यकारी सदस्यों, जिनके कन्धों पर यह दायित्व है, की मैं सहायता कर सकता हूँ, यह विशेष जयन्ती मनाने में उनकी कैसे सहायता कर सकता हूँ?''

सम्भवतया गुरुदेव की आने वाली १०८ वीं जयन्ती से सम्बन्धित ये दोनों बिन्दु विषय का सार-तत्त्व हैं। क्योंकि इस प्रकार गुरुदेव के इस आश्रम में हमारी एकत्व की भावना का यह प्रतीक होगा। हम इसके एक अंग हैं। यदि आश्रम इसे मना रहा है, तो यह भवन नहीं हैं, जो मना रहे हैं, यह लेखन-सामग्री एवं मेज़-कुरसी अथवा सज्जा-सामग्री 'शिवानन्द जयन्ती' नहीं मना रही है, बर्तन और धरती यह नहीं मना रहे हैं। यदि हमें लगता है कि हम गुरुदेव के प्रति कृतज्ञ हैं, तो यह हम हैं जो इसे मना रहे हैं।

''हाँ, मैं अपने कक्ष में बैठ कर और अधिक जप के रूप में यह मनाऊँगा।' ठीक है, आपकी इच्छा है तो आप यह कर सकते हैं। किन्तु, आप विचार करें कि जो-कुछ भी ज्ञान उन्होंने लिखित माध्यम से आपको दिया, वह आपके हाथों में उनकी संस्था के द्वारा, शिवानन्द आश्रम के कार्य-कर्ताओं के द्वारा, छापेखाने, प्रकाशकीय विभाग के माध्यम से पहुँचा इस प्रकार से श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज आपके जीवन में आये। उन्होंने आपके सम्मुख साक्षात् प्रकट हो कर यह नहीं कहा, ''मेरे प्रिय जिज्ञासु साधक! मैं तुम्हें यह प्रेरणा देता हूँ, तुम्हें ज्ञानोपदेशपूर्ण शिक्षा देता हूँ।'' उन्होंने स्वयं आ कर पाण्डुलिपि के रूप में कोई पुस्तक प्रदान नहीं की। हम डबलरोटी और बिस्कुट बनाने वाले व्यक्ति अथवा कारखाने के प्रति कृतज्ञ हैं, क्योंकि वह गेहूँ उत्पन्न करने वाले किसान और हम, जो डबलरोटी खाते हैं, के माध्यम का कारण हैं। बनाने वाले व्यक्तियों अथवा कारखाने का यही विशेष महत्त्व है।

इसी प्रकार भगवान् भी अपने सन्तों के माध्यम से हम तक आते हैं। ये सन्त हमारे पास आते हैं और अपने तात्कालिक एवं निकटस्थ शिष्यों के रूप में जीवन्त मानवीय संस्था बनाते हैं।

ईसामसीह ने संसार तक पहुँच कर स्वर्ग के साम्राज्य की सुखद सूचना स्वयं उद्घोषित नहीं की थी। उनके पट्टशिष्यों ने यीशु को समस्त संसार में पहुँचाया, तब सारे विश्व ने उन्हें जाना था। वे थे, जिन्होंने यह सब किया बारह पट्टशिष्य, जिन्होंने इसके लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया। अत: उनका एक महत्त्वपूर्ण, आवश्यक, मूल्यवान् एवं जीवन्त, विशेष स्थान है।

वे गैलिली के उपदेशक तथा उस मूल स्रोत, जिससे उनके गुरु का सम्पर्क स्थापित था, के मध्यस्थ थे। यीशु के भौतिक शरीर के न रहने पर भी उनका (यीशु का) कार्य चलता रहा। कैसे? उन्होंने स्वयं १०८ स्थानों पर प्रकट हो कर उपदेश नहीं दिया था। वे अपने उन पट्टशिष्यों के जीवन्त-सशक्त माध्यम से यह सब कर सके।

सभी महान् गुरुओं के साथ इसी प्रकार से हुआ। बुद्ध अपने पीछे अपने भिक्खु छोड़ कर गये। महान् दार्शनिक तथा जेन मास्टर ने अपने चयनित शिष्यों के माध्यम से यह कार्य किया। कुछ ने अपनी पुस्तकों द्वारा और कुछ ने अपने चयनित शिष्यों द्वारा ऐसा किया। अत: हमें सत्य अथवा वास्तविकता के प्रति उसी रूप में उत्तर देना चाहिए, जिस रूप में वह समक्ष आयी है। अत: आपको इस पावन आश्रम के अन्तेवासी होने से प्राप्त सौभाग्य के फलस्वरूप स्वयं को 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' के पदेन सदस्य के रूप में अपनी स्थिति पर मनन करते हुए यह कहना चाहिए, ''हम इस उत्सव को कैसे मनायेंगे, हम इसे मनाने में क्या सहायता करेंगे, हम ८ सितम्बर १९९५ में आने वाली गुरुदेव की १०८ वीं जयन्ती को मनाने में कैसे सहयोग करेंगे?''

इसके उपरान्त शीघ्र ही एक अन्य महत्त्वपूर्ण सुअवसर आने वाला है। जनवरी १९३६ में 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' की स्थापना हुई थी, और जनवरी १९६६ में, अपने संस्थापक सद्गुरुदेव के संकल्पानुसार कार्य में रत, इस संस्था

के ६० वर्ष पूर्ण हो जायेंगे। १ जनवरी से ३१ दिसम्बर १९६६ तक का वर्ष 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी' की हीरक जयन्ती का वर्ष होगा। इस समय आज मेरा बात कहने का यह विषय नहीं है। मैं तो केवल यह एक विचार आपके मन में डाल रहा हूँ, जिससे कि जिस प्रकार मैंने आपको गुरुदेव की १०८ वीं विशेष जयन्ती के साथ अपना सम्बन्ध समझने के लिए कहा है, उसी तरह से बाद में हीरक जयन्ती के सम्बन्ध में भी मनन करें।

मैं चाहता हूँ कि आपमें से प्रत्येक व्यक्ति इस आह्वान का उत्तर दे। कैसे? इसमें सक्रियता से सम्मिलित हो कर तथा गुरुदेव के हमारे लिए निर्धारित किये नियमों का पालन करते हुए स्वयं को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करके आप इस आह्वान का उत्तर दें। गुरुदेव के प्रति श्रद्धा, भक्ति, कृतज्ञता जैसे उदात्त भावों सहित इस प्रकार जीवन्त उत्तर देने से यह महोत्सव एक अद्‌भुत महोत्सव होगा, इससे सभी भागीदारों को प्रेरणा प्राप्त होगी और सम्भव है बहुत से लोगों के जीवन भी रूपान्तरित हो जायें! क्योंकि यह मानवीय तत्त्व ही है, जो

किसी भी होने वाली महान् घटना को जीवन्त गुण प्रदान करता है। जड़ वस्तु-पदार्थ भी हैं, किन्तु उनका स्वत: कोई सहयोग नहीं है; वह सहायता कर सकते हैं, किन्तु केवल तभी जब मनुष्य उनके साथ जुड़ता है। छापेखाने की मशीन तब तक एक निष्क्रिय वस्तु ही रहती है, जब तक मनुष्य जा कर काम आरम्भ नहीं करता। मानवीय तत्त्व ही वस्तुत: शक्ति देने वाला है। अब तो प्रत्येक वस्तु को स्वचालित बनाना चाहते हैं। वह समय निर्धारित कर सकते हैं, जब विद्युत् तरंगें प्रवाहित होना प्रारम्भ कर दें और मशीन स्वत: ही चलना आरम्भ कर दे। किन्तु जो मस्तिष्क यह स्वचालित कार्य आरम्भ करने वाला है, वह भी तो अन्तत: मानवीय तत्त्व ही है; सब-कुछ कहने का तात्पर्य यही है। और इसलिए यह संस्था जो-कुछ भी कर रही है अथवा भविष्य में करेगी, उसमें सबके पीछे निहित मानवीय तत्त्व आप ही हैं।

मैं इस दृष्टि से आपको देखता हूँ और चाहता हूँ कि आप भी स्वयं अपने-आपको इसी दृष्टि से देखें। परम पिता परमात्मा की कृपा एवं सद्गुरुदेव के आशीर्वाद आपको वह

स्पष्ट दृष्टि प्रदान करें जिससे आप जानें कि आप क्या हैं और क्या करने में समर्थ हैं तथा निश्चित रूप से आप वह करें। भगवान् और गुरुदेव की कृपा-वृष्टि आप पर हो कि आप परिपूर्ण स्पष्टता से और सही दृष्टिकोण से सब-कुछ देखें। भगवान् के आशीर्वाद सब पर हों! हरि ॐ तत्सत्!